CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर प्रणाम तेरे चरणोंमें लगता हूँ अब तेरे काज।
पालन करनेको आज्ञा तव मैं नियुक्त होता हूँ आज॥
अन्तरमें स्थित रहकर मेरे बागडोर पकड़े रहना।
निपट निरंकुश चंचल मनको सावधान करते रहना॥
अन्तर्यामीको अन्तःस्थित देख सशङ्कित होवे मन।
पाप-वासना उठते ही हो नाश लाजसे वह जल-भुन॥
जीवोंका कलरव जो दिनभर सुननेमें मेरे आवे।
तेरा ही गुणगान जान मन प्रमुदित हो अति सुख पावे॥
तू ही है सर्वत्र व्याप्त हरि! तुझमें यह सारा संसार।
इसी भावनासे अन्तरभर मिलूँ सभीसे तुझे निहार॥
प्रतिपल निज इन्द्रियसमूहसे जो कुछ भी आचार करूँ।
केवल तुझे रिझाने को, बस तेरा ही व्यवहार करूँ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गीता-दैनन्दिनी

[सन् २००५ ई०, वि० सं० २०६१-६२]

सूर्योदय-सूर्यास्तके समय (लगभग) गोरखपुरके हैं।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

प्रार्थना

क्षुद्र स्वार्थका नाश करो प्रभु! कर दो मनको अभी महान।
प्राणिमात्रका स्वार्थ, स्वार्थ है मेरा इसको ले मन मान॥
स्वकी सीमा अखिल विश्वके स्वमें जाकर मिल जाये।
सबके हितमें ही अपना हित यह निश्चय नहिं हिल पाये॥
सब भूतोंमें तुम्हीं भरे हो, सभी तुम्हारे ही हैं देह।
सबकी पूजामें तव पूजा, सबका नेह तुम्हारा नेह॥
छोटे-बड़े, देव-दानव-मानव, पशु-पक्षी हैं तव रूप।
वृक्ष-पहाड़, नदी-नद-सागर, व्योम-वायुमें वही स्वरूप॥
तुम्हीं पूर्ण हो इस पृथ्वीमें, तुम्हीं अग्निमें छाये हो।
सूर्य-चन्द्र-नक्षत्र ज्योतिमें, सबमें सदा समाये हो॥
तुम्हीं चराचर सकल विश्वमें, सदा तुम्हारा यह परिचय।
सभी दिशाओं, सभी दशाओं, सब देशोंमें तुम निश्चय॥
जीवन-मृत्यु, मिलन-बिछुड़न बन तुम ही सबमें आते हो।
लाभ-हानि, मानापमानमें अपना रूप छिपाते हो॥
सभी रसोंमें, रूप सभीमें, सभी दृश्य दर्शनमें तुम।
तुम ही द्रष्टा बने सदा ही तुम्हीं देखते तुममें तुम॥
सदा सभीमें तुम्हें देखकर सबका सदा करूँ सम्मान।
नाथ! कृपाकर मुझे आज ही दे दो यह सुन्दर वरदान॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'गीताप्रेस' गोरखपुरकी निजी दूकानें तथा स्टेशन-स्टाल

गोरखपुर-२७३००५	गीताप्रेस—पो० गीताप्रेस ✆ (०५५१) २३३४७२१, फैक्स २३३६९१७ website : www.gitapress.org / e-mail: booksales@gitapress.org
दिल्ली-११०००६	२६०९, नयी सड़क ✆ (०११) २३२६९६७८; फैक्स २३२५९१४०
कोलकाता- ७००००७	गोबिन्दभवन-कार्यालय; १५१, महात्मा गाँधी रोड, ✆ (०३३) २२६८६८९४, e-mail:gobindbhawan@gitapress.org फैक्स २२६८०२५१
मुम्बई-४००००२	२८२, सामलदास गाँधी मार्ग (प्रिन्सेस स्ट्रीट) मरीन लाइन्स स्टेशनके पास ✆ (०२२) २२०७२६३६
कानपुर-२०८००१	२४/५५, बिरहाना रोड ✆ (०५१२) २३५२३५१, फैक्स २३५२३५१
पटना-८००००४	अशोकराजपथ, महिला अस्पतालके सामने ✆ (०६१२) २३००३२५
राँची-८३४००१	कोर्ट सराय रोड, अपर बाजार, बिड़ला गद्दीके प्रथम तलपर ✆ (०६५१) २२१०६८५
सूरत-३९५००१	वैभव एपार्टमेन्ट, नूतन निवासके सामने, भटार रोड e-mail: suratdukan@gitapress.org; ✆ (०२६१) २२३७३६२, २२३८०६५
इन्दौर-४५२००१	जी०५, श्रीवर्धन, ४ आर एन. टी. मार्ग ✆ (०७३१)२५२६५१६, २५११९७७
जलगाँव-४२५००१	श्रीबल्लभ कॉम्प्लेक्स, नटवर टाकीज (महाराष्ट्र) ✆ (०२५७) २२२६३९३
हैदराबाद-५०००९६	४१, ४-४-१, दिलशाद प्लाजा, सुल्तान बाजार ✆ (०४०) २४७५८३११
नागपुर-४४०००२	श्रीजी कृपा कॉम्प्लेक्स, ८५१, न्यू इतवारी रोड ✆ (०७१२) २७३४३५४
कटक-७५३००९	भरतिया टावर्स, बादाम बाड़ी ✆ (०६७१) २३३५४८१
रायपुर-४९२००९	मित्तल कॉम्प्लेक्स, गंजपारा, तेलघानी चौक (छत्तीसगढ़) ✆ (०७७१) ५०३४४३०
वाराणसी-२२१००१	५९/९, नीचीबाग ✆ (०५४२) २४१३५५१ e-mail:varanasidukan@gitapress.org
हरिद्वार-२४९४०१	सब्जीमण्डी, मोतीबाजार ✆ (०१३३४) २२२६५७
ऋषिकेश-२४९३०४	गीताभवन, गङ्गापार, पो० स्वर्गाश्रम ✆ (०१३५) २४३०१२२ e-mail:gitabhawan@gitapress.org २४३२७९२

स्टेशन-स्टाल – दिल्ली जंक्शन (प्लेटफार्म नं० १२); नयी दिल्ली (नं० ८-९); हजरत निजामुद्दीन [दिल्ली] (नं० ४-५); कोटा [राजस्थान] (नं० १); बीकानेर (नं० १); गोरखपुर (नं० १); कानपुर (नं० १); लखनऊ [एन० ई० रेलवे]; वाराणसी (नं० ४-५); मुगलसराय जं० (नं० ३-४); हरिद्वार (नं० १); पटना जं० (मुख्य प्रवेशद्वार); राँची (नं० १); धनबाद (नं० २-३); मुजफ्फरपुर (नं० १); समस्तीपुर (नं० २); हावड़ास्टेशन (नं० ५ तथा १८ दोनोंपर); सियालदा मेन (नं० ८); आसनसोल (नं० ५); कटक (नं० १); भुवनेश्वर (नं० १); राऊरकेला (पुस्तक-ट्राली); राजगांगपुर (पुस्तक-ट्राली); औरंगाबाद [महाराष्ट्र] (नं० १); सिकन्दराबाद [आं० प्र०] (नं० १); गुवाहाटी जं० (मुसाफिरखाना); खड़गपुर (नं० १-२); रायपुर [छत्तीसगढ़] (नं० १) एवं अन्तर्राज्यीय बस-अड्डा, दिल्ली।

सन् २००५ उन्नीसवाँ संस्करण

ISBN 81-293-0149-0 मूल्य—सामान्य संस्करण—तीस रुपये

प्रकाशक-मुद्रक— गीताप्रेस, गोरखपुर—२७३००५

गोबिन्दभवन-कार्यालय, कोलकाता का संस्थान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्पूर्ण गीताका पाठ और मनन करनेकी दैनिक चर्या

साधकका नाम .....

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जीवनोपयोगी बातें

१. स्वावलम्बन सुधा है। अतः सादगीसे रहना चाहिये और स्वावलम्बी बनना चाहिये।

२. जीवनको अधिक खर्चीला नहीं बनाना चाहिये। अधिक खर्चीला जीवन मनुष्यको रुपयोंका दास बना देता है, जिसके कारण अनेक पाप करने पड़ते हैं।

३. मनुष्य-जीवनके समयको अमूल्य और क्षणिक समझकर उत्तम-से-उत्तम कार्यमें व्यतीत करना चाहिये। एक क्षण भी व्यर्थ नहीं करना चाहिये।

४. बोलते समय विचारपूर्वक सत्य, प्रिय, मित और हितके वचन बोलने चाहिये।

५. मनसे भगवान्‌का चिन्तन, वाणीसे भगवान्‌के नामका जप, सबको नारायण समझकर शरीरसे जगज्जनार्दनकी निःस्वार्थ सेवा—ये ही उत्तम-से-उत्तम कर्म हैं।

६. संध्या, गायत्री-जप, ध्यान, पूजा-पाठ, स्तुति-प्रार्थना निष्कामभाव एवं श्रद्धा-भक्तिपूर्वक सदा-सर्वदा नियमित करना चाहिये।

७. एकान्तमें मनको सदा यही समझाना चाहिये कि परमात्माके अतिरिक्त किसीका भी चिन्तन न करो, क्योंकि व्यर्थ चिन्तनसे बहुत बड़ी हानि है।

८. अपने ऊपर भगवान्‌की अहैतुकी कृपा और प्रेम समझकर हर समय प्रसन्न रहना चाहिये।

९. भोजनके समय भगवान्‌को भोग लगाकर और यथाधिकार बलिवैश्वदेव करके भगवान्‌के प्रति कृतज्ञताका अनुभव करते हुए भोजन करें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वैराग्यका एक क्षण

वाराणसीके सबसे बड़े सेठका पुत्र यश विलासी और विषयी-जीवन व्यतीत कर रहा था। उसके विलासके लिये ग्रीष्म, हेमन्त और वर्षाकालके लिये तीन बहुमूल्य प्रासाद बने हुए थे। एक बार वह अपने वर्षाकालीन प्रासादमें राग-रंगमें निमग्न था। अनेक रमणियों तथा नर्तकियोंने उसका भरपूर मनोरंजन किया। तदनन्तर वह अपने बहुमूल्य बिस्तरपर सो गया। रात्रिके अन्तिम पहरमें अचानक उसकी निद्रा टूट गयी। उसने देखा कि नर्तकियाँ तथा परिचारिकाएँ चेतनाशून्य पड़ी हुई थीं। किसीके मुखसे लार टपक रहा था तो किसीके अधरोंपर कफका फेनिल विकार था। कोई टेढ़ी सो रही थी तो किसीकी अनावृत भुजाएँ बीभत्सता प्रकट कर रही थीं। किसी रमणीके गलेमें मृदंग था तो किसीकी अंगुली वीणाके तारोंका स्पर्श कर रही थी। कामिनियोंकी कनक-कायाका वह कुत्सित रूप देखकर उसकी आत्मा सिहर गयी। उसने सोचा—'मैं जिसे सत्य और सौन्दर्य समझता था, वह रूप नश्वर और असत्य है।'

यशके हृदयमें वैराग्यका उदय हुआ और वह सत्यकी खोजके लिये महात्मा बुद्धके चरणोंमें पहुँचा। उसने निवेदन किया—'यह संसार पीड़ित, संतप्त और असत्य है भन्ते! मुझे सत्यका स्वरूप बताइये।' भगवान् बुद्धने दान, शील, धर्म, दुःखका कारण और उसके नाशका उपाय बताकर यशकी आत्माको प्रबुद्ध किया। यशको ज्ञानचक्षु और निर्मल वैराग्य प्राप्त हुआ। वैराग्यका एक क्षण उसके लिये अमृतस्वरूप हो गया। उसे संसारके अनित्यताका पता चल गया।

एक दिन यशके माता-पिता तथा पत्नी रोते-पीटते हुए यशको घर ले जानेके लिये आये। परंतु माता-पिताकी ममता और सुन्दर पत्नीकी आसक्ति यशके समक्ष पराजित होकर असफल हो गयी। भगवान् बुद्धने कहा—'यश अब कामोपभोगके योग्य नहीं है सेठ! इसने निर्मल वैराग्यका पथ ग्रहण कर लिया है।' सेठके अनुरोधपर भगवान् बुद्ध यशके साथ उसके घर भिक्षा ग्रहण करने गये। अब तो सेठका पूरा परिवार वैराग्यका पथिक बन गया। यह था वैराग्यके एक क्षणका वास्तविक चमत्कार।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रातःस्मरणीय श्लोक

ब्राह्ममुहूर्त्तमें उठकर धर्म, अर्थ, काम और मोक्षकी सिद्धि तथा निर्विघ्न दिन व्यतीत करनेके लिये निम्न श्लोकोंके द्वारा नित्य गणेश, विष्णु, सूर्य, दुर्गा और शिवका स्मरण करना चाहिये।

प्रातः स्मरामि गणनाथमनाथबन्धुं
सिन्दूरपूरपरिशोभितगण्डयुग्मम् ।
उद्दण्डविघ्नपरिखण्डनचण्डदण्ड-
माखण्डलादिसुरनायकवृन्दवन्द्यम् ॥ १ ॥

प्रातर्भजामि भजतामभयङ्करं तं
प्राक्सर्वजन्मकृतपापभयापहत्यै ।
यो ग्राहवक्त्रपतिताङ्घ्रिगजेन्द्रघोर-
शोकप्रणाशनकरो धृतशङ्खचक्रः ॥ २ ॥

प्रातः स्मरामि खलु तत्सवितुर्वरेण्यं
रूपं हि मण्डलमृचो यजुषां निधानम्।
सामानि यस्य किरणाः प्रभवादिहेतुं
ब्रह्माहरात्मकमलक्ष्यमचिन्त्यरूपम् ॥ ३ ॥

प्रातर्भजामि भजतामभिलाषदात्रीं
धात्रीं समस्तजगतां दुरितापहन्त्रीम्।
संसारबन्धनविमोचनहेतुभूतां
मायां परां समधिगम्य परस्य विष्णोः ॥ ४ ॥

प्रातः स्मरामि भवभीतिहरं सुरेशं
गङ्गाधरं वृषभवाहनमम्बिकेशम्।
खट्वाङ्गशूलवरदाभयहस्तमीशं
संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ॥ ५ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

श्रीमद्भगवद्गीता

अथ प्रथमोऽध्यायः

धृतराष्ट्र उवाच

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः । मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सञ्जय । १ ।

सञ्जय उवाच

दृष्ट्वा तु पाण्डवानीकं व्यूढं दुर्योधनस्तदा । आचार्यमुपसङ्गम्य राजा वचनमब्रवीत् । २ ।

पौष कृष्ण ६, शनिवार, वि० सं० २०६१, 'हेमलम्बनाम' संवत्सर,
शक १९२६, श्रीकृष्ण-सं० ५२३०, JAN. 1 सन् 2005

सूर्यो० ६ । ४६ — भद्रा रात्रिशेष ५ । ३८ बजेसे — सूर्यो० ५ । १४

आज मेरे ज्ञानदिन का पचासवाँ वर्ष प्रारंभ हुआ
गणना। १ जनवरी १९५५ में मेरा जन्म हुआ था। पश्चिमी
गणना से सन्तति को दिन माना जाता है।
आज अपने हृदय में, चौरासी वर्ष पूरे करके मैंने
पचासवें वर्ष में प्रवेश किया।

श्री प्रभादत्त जी पाण्डेय साहब ने उत्सव मनाया-
फल फूल-वस्त्र, सामग्रियां किया।

dhṛtarāṣṭra uvāca

dharmakṣetre kurukṣetre samavetā yuyutsavaḥ māmakāḥ pāṇḍavāścaiva kimakurvata sañjaya

sañjaya uvāca

dṛṣṭvā tu pāṇḍavānīkaṁ vyūḍhaṁ duryodhanastadā ācāryamupasaṅgamya rājā vacanamabravīt

(Ch. 1/1-2)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पश्यैतां पाण्डुपुत्राणामाचार्य महतीं चमूम्। व्यूढां द्रुपदपुत्रेण तव शिष्येण धीमता। ३।
अत्र शूरा महेष्वासा भीमार्जुनसमा युधि। युयुधानो विराटश्च द्रुपदश्च महारथः। ४।

सूर्यो० ६। ४६ ——— भद्रा सायं ५। ४८ बजेतक ——— सूर्यो० ५। १५

आज कुरुक्षेत्र- पांचजन्य में श्रीकृष्ण कथा आरम्भ करनेवाले थे। अतएव पत्रिकाके वितरकोंसे आवश्यक संबन्ध भी प्रसाद रूपमें दीक्षितजीसे प्राप्त था। अतएव मैंने निश्चय किया कि - यथाशीघ्र किसी प्रकार वहां पहुंचूं भी कलकत्ते।

एक पुत्र दिल्लीमें है, इसको कैसे तार दूं यही इन्द्रजीत शर्मा से लिखा कि - किसी प्रकार हर्ष मधु तो आजसे कलकत्ता वे लेकर आयेंगे, लोकलाज विसर्जन का मुझको एकदम किया होते आवे। साथ साथ शीलाजी बुकसीदास - श्रीमद्भागवत एवं व्यक्तित्व एवं कृतित्व की - ऐसी पुस्तिका प्रकाशन भी कलकत्ते शकुन्तला से लेकर के आवेंगे। लाये।

एक पोस्टकार्ड - मैंने एडगवाये रानी को भी ही लिखे कि वहां विलासिनी में ठहरा जाय। भागवत - प्रवचन समिति का सम्मेलन - देखे एवं कलकत्ते भी सुविधा पूर्वक रामकृष्ण मिशन जाऊं।

संक्षिप्तिके संबंध में - जो मुझे ही उचित लगते अनुसार समाचार आये। साथ ही आगेका पत्र विद्युत्का किया जाय। पत्रिका की भांति - पत्रिका के - औरिजिनल पत्र दे दिये जायें।

paśyaitāṁ pāṇḍuputrāṇāmācārya mahatīṁ camūm vyūḍhāṁ drupadaputreṇa tava śiṣyeṇa dhīmatā
atra śūrā maheṣvāsā bhīmārjunasamā yudhi yuyudhāno virāṭaśca drupadaśca mahārathaḥ
(Ch. 1/3-4)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धृष्टकेतुश्चेकितानः काशिराजश्च वीर्यवान्। पुरुजित्कुन्तिभोजश्च शैब्यश्च नरपुङ्गवः।५।
युधामन्युश्च विक्रान्त उत्तमौजाश्च वीर्यवान्। सौभद्रो द्रौपदेयाश्च सर्व एव महारथाः।६।

सूर्यो० ६। ४६ ..... सूर्यो० ५। १५

पांचों की अन्तर्भूमी - की वजह
आदेश है। यहाँ के लोगों की दया हो रही है। कुछ दूरी - अन्तराल भी
चल रहा है। प्रेमानन्द गुरुजी दीक्षित सर्व पंच गवेरन वगैरह भी
कर रहे हैं। उनलोगों के आने से अच्छी मदद है। दोनों स्थानों के
लोग भी वापस आयेंगे।

× ×

पाण्डवों का अद्भुत पूर्व
निश्चितरूप
उनमें जो वीर्य
धारण करते हैं किसी
[illegible]

dhṛṣṭaketuścekitānaḥ kāśirājaśca vīryavān purujitkuntibhojaśca śaibyaśca narapuṅgavaḥ
yudhāmanyuśca vikrānta uttamaujāśca viryavān saubhadro draupadeyāśca sarva eva mahārathāḥ
(Ch. 1/5-6)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अस्माकं तु विशिष्टा ये तान्निबोध द्विजोत्तम । नायका मम सैन्यस्य सञ्ज्ञार्थं तान्ब्रवीमि ते । ७ ।
भवान्भीष्मश्च कर्णश्च कृपश्च समितिञ्जयः । अश्वत्थामा विकर्णश्च सौमदत्तिस्तथैव च । ८ ।

सूर्या० ६ । ४७ ..... आज वाल्मीकि का विश्वकल्याण गायन है । ..... सूर्या० ५ । १६

नमस्ते सीतायै है । राम मिल गये इसलिए यानी सीता के मिलने ।
प्रसिद्ध कवि ध्यानसिंह तिवारी जी का भजन और रामतत्त्वकार जी के विश्व के अंत के लक्ष्य में ।-
इन्द्रजु- रुद्र जैसे रामजी रख फरीके मधु-विष्णु का युद्ध।
तथा किरातार्जुन-युद्ध के अनिलिख !! शास्त्री कुलमणि-
जीवन कृत ॐ अक्षय प्रकाश की ध्वनि पिछले
वर्ष में किसी ने उनके प्राण ले लिए।

asmākaṁ tu viśiṣṭā ye tānnibodha dvijottama nāyakā mama sainyasya sañjñārthaṁ tānbravīmi te
bhavānbhīṣmaśca karṇaśca kṛpaśca samitiñjayaḥ aśvatthāmā vikarṇaśca saumadattistathaiva ca
(Ch. 1/7-8)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अन्ये च बहवः शूरा मदर्थे त्यक्तजीविताः । नानाशस्त्रप्रहरणाः सर्वे युद्धविशारदाः । ९ ।
अपर्याप्तं तदस्माकं बलं भीष्माभिरक्षितम् । पर्याप्तं त्विदमेतेषां बलं भीमाभिरक्षितम् । १० ।

सूर्यो० ६। ४७ ..... भद्रा सायं ४। ३५ बजेसे रात्रिशेष ४। २ बजेतक ..... सूर्यो० ५। १७

आज दुर्योधन राजनीति में पक्के और उनकी सहिष्णुता यही समाप्त-सी हो जाती है। सभी अन्य पात्र ऐसे हैं जैसे उन्हें कहानी-सभी अनुभूतियां भी प्रमोद सागर दीक्षित ही-सविधि पढ़ा ही हैं। उनके अनुमति लेकर रहस्य करते हैं। इसके कुछ समय ही अनेक नाम दुर्योधन कैसे पांडवों के पक्ष-सभी पात्र उनके और उनके प्रशंसक साक्षी उभरी। एक कुछ अनुभूतियां संख्या मेरे लिए का दिया। मैं कि किसका-ये पात्रों के कलियुग हैं।

anye ca bahavaḥ śūrā madarthe tyaktajīvitāḥ nānāśastrapraharaṇāḥ sarve yuddhaviśāradāḥ
aparyāptaṁ tadasmākaṁ balaṁ bhīṣmābhirakṣitam paryāptaṁ tvidameteṣāṁ balaṁ bhīmābhirakṣitam
(Ch. 1/9-10)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अयनेषु च सर्वेषु यथाभागमवस्थिताः। भीष्ममेवाभिरक्षन्तु भवन्तः सर्व एव हि। ११।
तस्य सञ्जनयन्हर्षं कुरुवृद्धः पितामहः। सिंहनादं विनद्योच्चैः शङ्खं दध्मौ प्रतापवान्। १२।

सूर्यो० ६। ४७ — सफला एकादशीव्रत (सबका) — सूर्यो० ५। १८

ayaneṣu ca sarveṣu yathābhāgamavasthitāḥ bhīṣmamevābhirakṣantu bhavantaḥ sarva eva hi
taṣya sañjanayanharṣaṁ kuruvṛddhaḥ pitāmahaḥ siṁhanādaṁ vinadyoccaiḥ śaṅkhaṁ dadhmau pratāpavān
(Ch. 1/11-12)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भीष्मद्रोणप्रमुखतः सर्वेषां च महीक्षिताम्। उवाच पार्थ पश्यैतान्समवेतान्कुरूनिति। २५।
तत्रापश्यत्स्थितान् पार्थः पितॄनथ पितामहान्। आचार्यान्मातुलान्भ्रातॄन्पुत्रान्पौत्रान्सखींस्तथा। २६।

सूर्यो० ६। ४७ ..... भद्रा दिनमें ९। २० बजेतक, मकर-संक्रान्ति दिनमें ११। १७ बजे, मकर-संक्रान्तिजन्य पुण्यकाल दिनमें ११। १७ बजेसे सूर्यास्ततक, खरमास समाप्त ..... सूर्यो० ५। २४

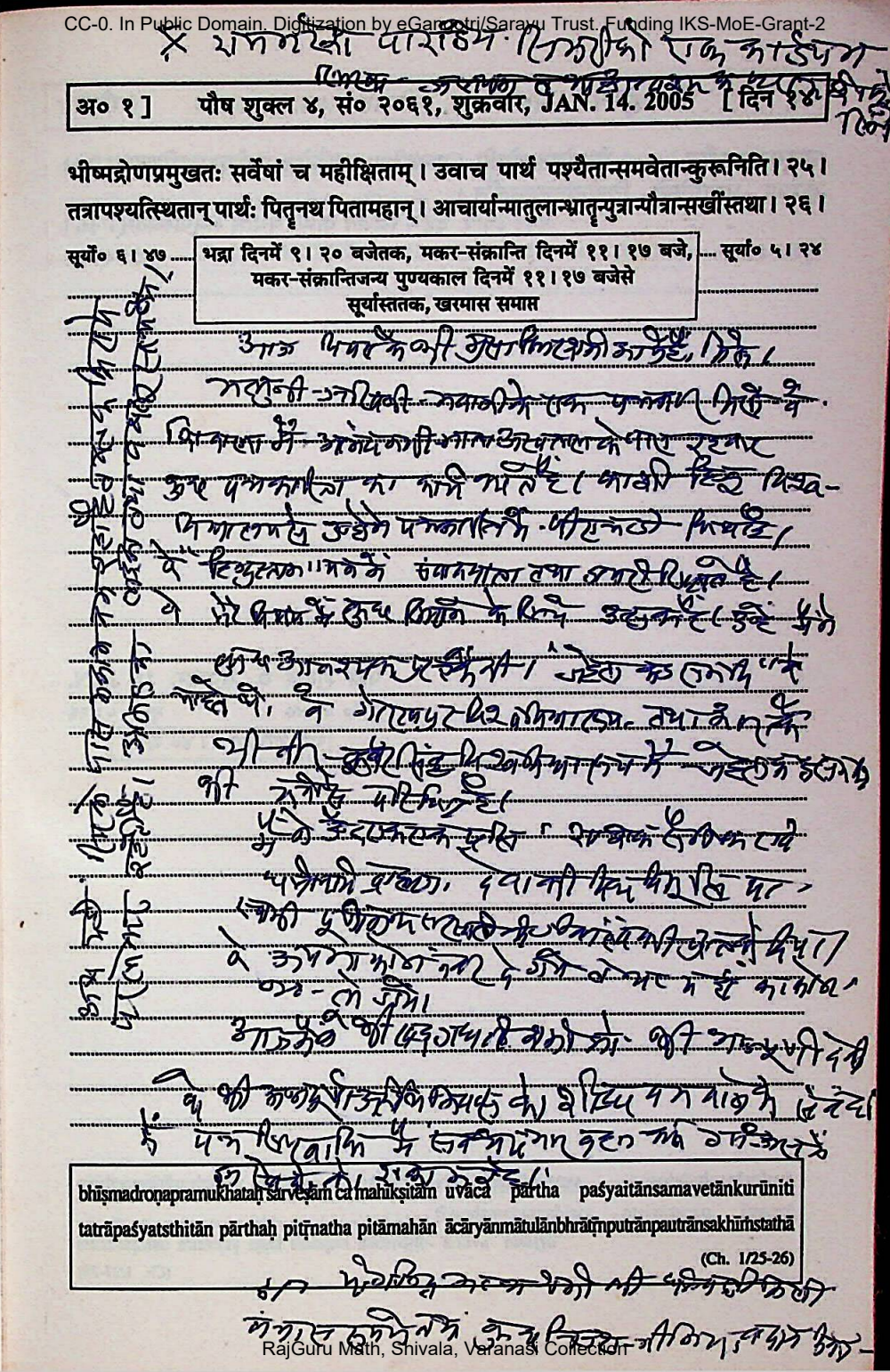

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयमविकार्योऽयमुच्यते। तस्मादेवं विदित्वैनं नानुशोचितुमर्हसि। २५।
अथ चैनं नित्यजातं नित्यं वा मन्यसे मृतम्। तथापि त्वं महाबाहो नैवं शोचितुमर्हसि। २६।

सूर्यो० ६। ३६ ..... राज० अभिलेखागार सुन्धा० भंगराव ..... सूर्यो० ५। ४५

अगर्मे, इन्होंने दूरभाष से पहलेसे प्रभाव कुमार दीक्षित को सूचित किया था - मैं. मई. मो० उत्तराखंडी राजकी पुत्री मालती के पुत्र का विवाह था, वह मेरे पितृपुरम में अपना अच्छी बात चुनी है। कलकत्ते मेरी उनका पर दमदम-इलाहाबाद पहुंचना है। इसलीए वहीं मेरी सगाई में उपस्थित होने। तथासार मैं प्रत्येक दीक्षित स्वं अन्य कोलाय नहीं जाना। मुझे बहुत देर तक रहना पड़ा। मुझे इसी फोन पर भी आना संभव न मिलेगा। अंडीट होगी-१२ बजे बैठक का समय गया।

avyakto'yamacintyo'yamavikāryo'yamucyate tasmādevaṁ viditvainaṁ nānuśocitumarhasi
atha cainaṁ nityajātaṁ nityaṁ vā manyase mṛtam tathāpi tvaṁ mahābāho naivaṁ śocitumarhasi
(Ch. 2/25-26)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च। तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि। २७।
अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत। अव्यक्तनिधनान्येव तत्र का परिदेवना। २८।

सूर्यो० ६। ३६ ---- वैनायकी श्रीगणेशचतुर्थीव्रत, भद्रा दिनमें १०। ११ बजेसे रात्रिमें ९। ३४ बजेतक, कुम्भ-संक्रान्ति रात्रिमें १०। १ बजे ---- सूर्यो० ५। ४६

प्रातः प्रातः मुक्ता-वक्त्र धारण करें। उनके
सम्पर्क से- पटना- डा० राजलक्ष्मी शर्मी पंचैत्य सम्पर्क किया,
वे, अति रुग्ण थीं, डा० रक्षेत्रा निम्न- हृदयाघात
एवं पक्षाघात से ग्रसित थीं एकाएक दबा- उन्हें
उनकी पुत्री एवं दीर्घकाल से रोग का दृढ़ इतिहास था

श्री मधु-भाई, इन्हीं दोष - मुक्तपक्षपाती
उनकी स्वाध्यायिका → भी। उनका वैसी ही की सेवा करें
रचनाएँ- अनेकानेक संस्थाओं की सेवा भी।

माघ शुक्ल ५, रविवार, 13 FEB.
सूर्यो० ६। ३५ सूर्यो० ५। ४६
पञ्चक समाप्त सायं ६। ५० बजे, वसन्तपञ्चमी

jātasya hi dhruvo mṛtyurdhruvaṁ janma mṛtasya ca tasmādaparihārye'rthe na tvaṁ śocitumarhasi
avyaktādīni bhūtāni vyaktamadhyāni bhārata avyaktanidhanānyeva tatra kā paridevanā
(Ch. 2/27-28)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इन्द्रियाणां हि चरतां यन्मनोऽनुविधीयते । तदस्य हरति प्रज्ञां वायुर्नावमिवाम्भसि। ६७।
तस्माद्यस्य महाबाहो निगृहीतानि सर्वशः । इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता। ६८।

सूर्यो० ६। १४ ..... भौमप्रदोष, महाशिवरात्रिव्रत, भद्रा सायं ६। ५५ बजेसे रात्रिशेष ५। ५१ बजेतक, पञ्चकारम्भ सायं ६। ४३ बजे ..... सूर्या० ६। १

indriyāṇāṁ hi caratāṁ yanmano'nuvidhīyate tadasya harati prajñāṁ vāyurnāvamivāmbhasi
tasmādyasya mahābāho nigṛhītāni sarvaśaḥ indriyāṇīndriyārthebhyastasya prajñā pratiṣṭhitā
(Ch. 2/67-68)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीभगवानुवाच

बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन । तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परन्तप । ५ ।
अजोऽपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपि सन् । प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय सम्भवाम्यात्ममायया । ६ ।

सूर्यो० ५ । ४१ ..... अमावास्या ..... सूर्यो० ६ । १७

śrībhagavānuvāca

bahūni me vyatītāni janmāni tava cārjuna tānyahaṁ veda sarvāṇi na tvaṁ vettha parantapa
ajo'pi sannavyayātmā bhūtānāmīśvaro'pi san prakṛtiṁ svāmadhiṣṭhāya sambhavāmyātmamāyayā
(Ch. 4/5-6)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यस्य सर्वे समारम्भाः कामसङ्कल्पवर्जिताः। ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं तमाहुः पण्डितं बुधाः। १९।
त्यक्त्वा कर्मफलासङ्गं नित्यतृप्तो निराश्रयः। कर्मण्यभिप्रवृत्तोऽपि नैव किञ्चित्करोति सः। २०।

सूर्यो० ५। ३२ ..... भद्रा प्रातः ६। १० बजेसे रात्रिमें ७। १२ बजेतक ..... सूर्यो० ६। २१

चैत्र शुक्ल ८, रविवार, 17 APRIL
सूर्यो० ५। ३१ सूर्यो० ६। २१
श्रीदुर्गाष्टमी-श्रीरामनवमीव्रत

आज राम नवमी व्रत-पारण कार्य. चक्र है
लिये प्रस्थान- सिंगरौली की यात्रा.
कांग्रेस पर रेलवाकांड - मंत्री ने [illegible]
आपका वोट: इंडिया इंडिया-शाइनिंग पर
भी राजस्थान में [illegible]
मिश्रजी का [illegible]

yasya sarve samārambhāḥ kāmasaṅkalpavarjitāḥ jñānāgnidagdhakarmāṇaṁ tamāhuḥ paṇḍitaṁ budhāḥ
tyaktvā karmaphalāsaṅgaṁ nityatṛpto nirāśrayaḥ karmaṇyabhipravṛtto'pi naiva kiñcitkaroti saḥ
(Ch. 4/19-20)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गतसङ्गस्य मुक्तस्य ज्ञानावस्थितचेतसः। यज्ञायाचरतः कर्म समग्रं प्रविलीयते। २३।
ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना। २४।

सूर्यो० ५। ३० — भद्रा रात्रिमें १२।५७ बजेसे — सूर्यो० ६। २२

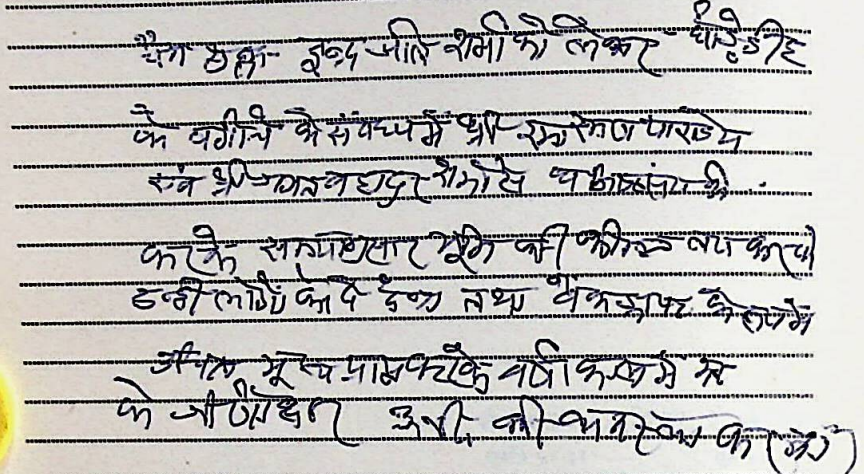

gatasaṅgasya muktasya jñānāvasthitacetasaḥ yajñāyācarataḥ karma samagraṁ pravilīyate
brahmārpaṇaṁ brahma havirbrahmāgnau brahmaṇā hutam brahmaiva tena gantavyaṁ brahmakarmasamādhinā
(Ch. 4/23-24)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लभन्ते ब्रह्मनिर्वाणमृषयः क्षीणकल्मषाः। छिन्नद्वैधा यतात्मानः सर्वभूतहिते रताः। २५।
कामक्रोधवियुक्तानां यतीनां यतचेतसाम्। अभितो ब्रह्मनिर्वाणं वर्तते विदितात्मनाम्। २६।

सूर्यो० ५। १० ····· श्रीरामानुजाचार्य-जयन्ती, वृष-संक्रान्ति रात्रिमें १०। २५ बजे ····· सूर्यो० ६। ३६

वैशाख शुक्ल ७, रविवार, 15 MAY

सूर्यो० ५। ९ सूर्यो० ६। ३७

श्रीगङ्गासप्तमी, भद्रा रात्रिमें १०। ४९ बजेसे

आज ये बीसोंश्लोकों के अर्थ इसप्रकार हुए की श्रीमद्भागवत कथा होने वाली है. प्रमोदकुमार पुरोहित जी पं० सुरेश्वर शर्मा मिलकर आयोजन करेंगे. प्रमोदकुमार पोद्दार की धर्मपत्नी सुनंदा बच्चे व विवेक के ननंद है

labhante brahmanirvāṇamṛṣayaḥ kṣīṇakalmaṣāḥ chinnadvaidhā yatātmānaḥ sarvabhūtahite ratāḥ
kāmakrodhaviyuktānāṁ yatīnāṁ yatacetasām abhito brahmanirvāṇaṁ vartate viditātmanām
(Ch. 5/25-26)

आज अमावस्या है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आहुस्त्वामृषयः सर्वे देवर्षिर्नारदस्तथा । असितो देवलो व्यासः स्वयं चैव ब्रवीषि मे। १३।
सर्वमेतदृतं मन्ये यन्मां वदसि केशव । न हि ते भगवन्व्यक्तिं विदुर्देवा न दानवाः। १४।

सूर्यो० ५। २६ ..... सूर्यो० ६। ३६

श्रावण शुक्ल ९, रविवार, 14 AUG.

सूर्यो० ५। २७ सूर्यो० ६। ३५

आज आरंभिक अभ्यास किया, श्री कृष्णचन्द्र जी की आज्ञा-अधिकता, आनंद दायक तथा श्री दे० श्री दुर्गानाथ सिंह - श्री हरीपीठ, पटना की पत्र लिखा - तथा कुछ पुस्तकें के - पुस्तक विक्रेता लोगों से संपर्क करके - पाने की कोशिश के लिये लिखा।

āhustvāmṛṣayaḥ sarve devarṣirnāradastathā asito devalo vyāsaḥ svayaṁ caiva bravīṣi me sarvametadṛtaṁ manye yanmāṁ vadasi keśava na hi te bhagavanvyaktiṁ vidurdevā na dānavāḥ
(Ch. 10/13-14)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वयमेवात्मनात्मानं वेत्थ त्वं पुरुषोत्तम। भूतभावन भूतेश देवदेव जगत्पते। १५।
वक्तुमर्हस्यशेषेण दिव्या ह्यात्मविभूतयः। याभिर्विभूतिभिर्लोकानिमांस्त्वं व्याप्य तिष्ठसि। १६।

सूर्यो० ५। २७ --- स्वतन्त्रतादिवस, श्रावण सोमवारव्रत, भद्रा रात्रिमें १०। २० बजेसे --- सूर्या० ६। ३४

svayamevātmanātmānaṁ vettha tvaṁ puruṣottama bhūtabhāvana bhūteśa devadeva jagatpate
vaktumarhasyaśeṣeṇa divyā hyātmavibhūtayaḥ yābhirvibhūtibhirlokānimāṁstvaṁ vyāpya tiṣṭhasi
(Ch. 10/15-16)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तत्क्षेत्रं यच्च यादृक्च यद्विकारि यतश्च यत् । स च यो यत्प्रभावश्च तत्समासेन मे शृणु । ३ ।
ऋषिभिर्बहुधा गीतं छन्दोभिर्विविधैः पृथक् । ब्रह्मसूत्रपदैश्चैव हेतुमद्भिर्विनिश्चितैः । ४ ।
महाभूतान्यहङ्कारो बुद्धिरव्यक्तमेव च । इन्द्रियाणि दशैकं च पञ्च चेन्द्रियगोचराः । ५ ।

सूर्यो० ५ । ५१ ——— भद्रा रात्रिशेष ४ । ६ बजेसे ——— सूर्यो० ५ । ३९

tatkṣetraṁ yacca yādṛkca yadvikāri yataśca yat sa ca yo yatprabhāvaśca tatsamāsena me śṛṇu
ṛṣibhirbahudhā gītaṁ chandobhirvividhaiḥ pṛthak brahmasūtrapadaiścaiva hetumadbhirviniścitaiḥ
mahābhūtānyahaṅkāro buddhiravyaktameva ca indriyāṇi daśaikaṁ ca pañca cendriyagocarāḥ
(Ch. 13/3—5)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यदा भूतपृथग्भावमेकस्थमनुपश्यति । तत एव च विस्तारं ब्रह्म सम्पद्यते तदा । ३० ।
अनादित्वान्निर्गुणत्वात्परमात्मायमव्ययः । शरीरस्थोऽपि कौन्तेय न करोति न लिप्यते । ३१ ।
यथा सर्वगतं सौक्ष्म्यादाकाशं नोपलिप्यते । सर्वत्रावस्थितो देहे तथात्मा नोपलिप्यते । ३२ ।

सूर्यो० ५। ५६ ---- पञ्चक समाप्त सायं ६। १२ बजे, भद्रा प्रातः ६। ३९ बजेतक, पूर्णिमा, महर्षि वाल्मीकि-जयन्ती, कार्तिकस्नानारम्भ, चन्द्रग्रहण, तुला-संक्रान्ति रात्रिमें १२। ४३ बजे ---- सूर्यो० ५। २७

आज वेनीपुरके श्रीचन्द्रशेखर आजाद कैलाशी।
इसके पूर्व माहिलाही ग्राम - यशवन्तराम केपाधिन
पता - शाक स्कूलमें शिक्षक हैं। शेखर
मध्यप्रदेश पुलिस की टुकड़ी चला है उसमें एक सौ एपी मिल।
मैंने पत्र लिखा मन्नू भण्डारी को कि,
सीमा पत्रिका में - [illegible]
एक मन्नू भण्डारी तथा एक राजेन्द्र यादव को।
पत्र एक ही दूध का पर दिल्ली का
दो लिफाफा।
इसके पूर्व मेरा - मीडिया दफ्तर रही
दो भी थोड़ा डेट के बाद के लिखे में पत्र
भेजे गये हैं।

yadā bhūtapṛthagbhāvamekasthamanupaśyati tata eva ca vistāraṁ brahma sampadyate tadā
anāditvānnirguṇatvātparamātmāyamavyayaḥ śarīrastho'pi kaunteya na karoti na lipyate
yathā sarvagataṁ saukṣmyādākāśaṁ nopalipyate sarvatrāvasthito dehe tathātmā nopalipyate
(Ch. 13/30—32)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यथा प्रकाशयत्येकः कृत्स्नं लोकमिमं रविः। क्षेत्रं क्षेत्री तथा कृत्स्नं प्रकाशयति भारत। ३३।
क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोरेवमन्तरं ज्ञानचक्षुषा। भूतप्रकृतिमोक्षं च ये विदुर्यान्ति ते परम्। ३४।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागयोगो नाम त्रयोदशोऽध्यायः॥ १३॥

सूर्यो० ५। ५७ ..... सूर्यो० ५। २६

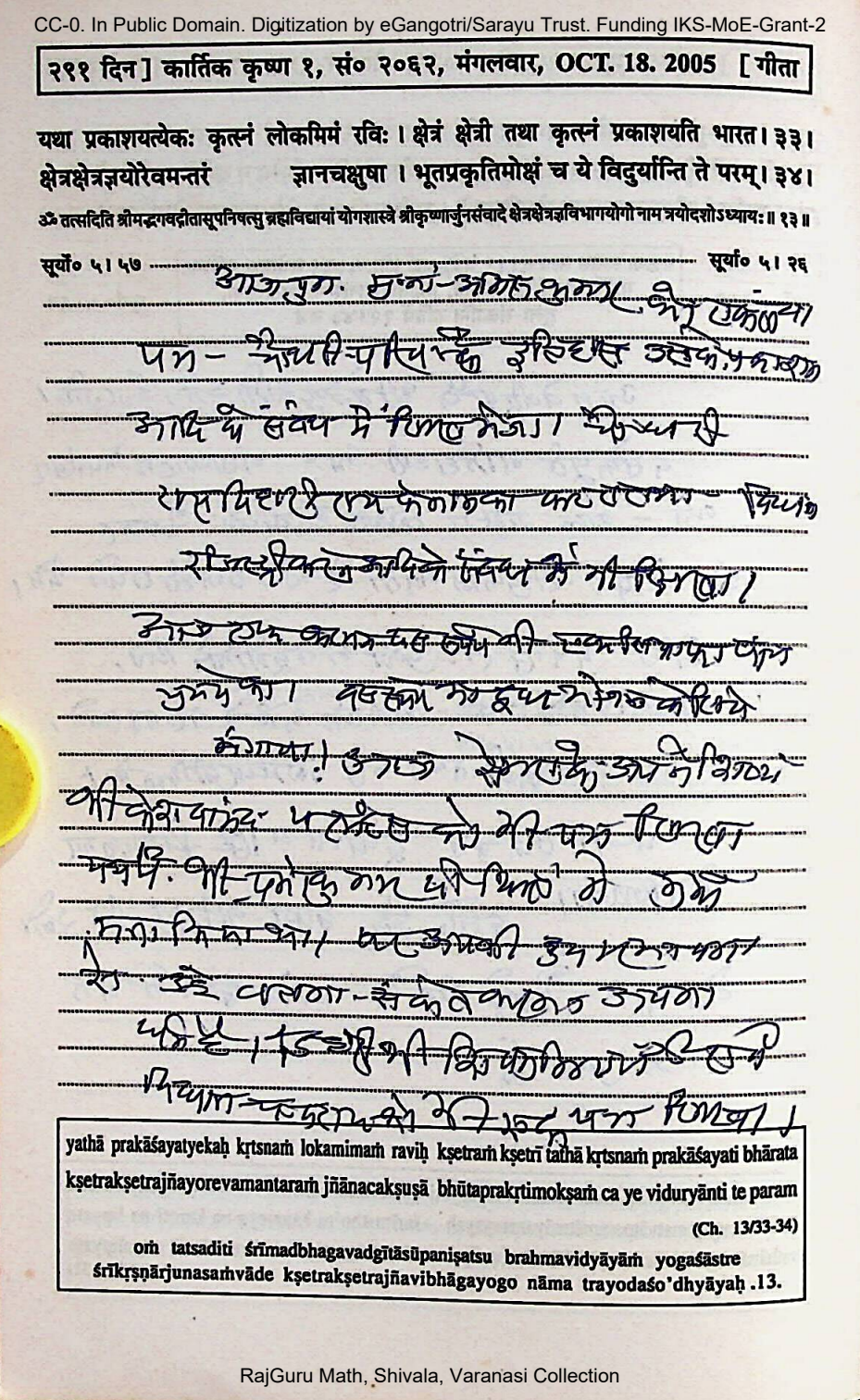

yathā prakāśayatyekaḥ kṛtsnaṁ lokamimaṁ raviḥ kṣetraṁ kṣetrī tathā kṛtsnaṁ prakāśayati bhārata
kṣetrakṣetrajñayorevamantaraṁ jñānacakṣuṣā bhūtaprakṛtimokṣaṁ ca ye viduryānti te param
(Ch. 13/33-34)

oṁ tatsaditi śrīmadbhagavadgītāsūpaniṣatsu brahmavidyāyāṁ yogaśāstre
śrīkṛṣṇārjunasaṁvāde kṣetrakṣetrajñavibhāgayogo nāma trayodaśo'dhyāyaḥ .13.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS MoE-Grant-2

निश्चयं शृणु मे तत्र त्यागे भरतसत्तम । त्यागो हि पुरुषव्याघ्र त्रिविधः सम्प्रकीर्तितः । ४ ।
यज्ञदानतपःकर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत् । यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम् । ५ ।
एतान्यपि तु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा फलानि च । कर्तव्यानीति मे पार्थ निश्चितं मतमुत्तमम् । ६ ।

सूर्यो० ६ । २६ — भौमप्रदोष, भद्रा रात्रिमें ९ । ३१ बजेसे — सूर्यो० ५ । ३

niścayaṁ śṛṇu me tatra tyāge bharatasattama tyāgo hi puruṣavyāghra trividhaḥ samprakīrtitaḥ
yajñadānatapaḥkarma na tyājyaṁ kāryameva tat yajño dānaṁ tapaścaiva pāvanāni manīṣiṇām
etānyapi tu karmāṇi saṅgaṁ tyaktvā phalāni ca kartavyānīti me pārtha niścitaṁ matamuttamam
(Ch. 18/4—6)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नियतस्य तु सन्न्यासः कर्मणो नोपपद्यते । मोहात्तस्य परित्यागस्तामसः परिकीर्तितः । ७ ।
दुःखमित्येव यत्कर्म कायक्लेशभयात्त्यजेत् । स कृत्वा राजसं त्यागं नैव त्यागफलं लभेत् । ८ ।
कार्यमित्येव यत्कर्म नियतं क्रियतेऽर्जुन । सङ्गं त्यक्त्वा फलं चैव स त्यागः सात्त्विको मतः । ९ ।

सूर्यो० ६ । २७ ..... भद्रा दिनमें ९ । २५ बजेतक ..... सूर्यो० ५ । ३

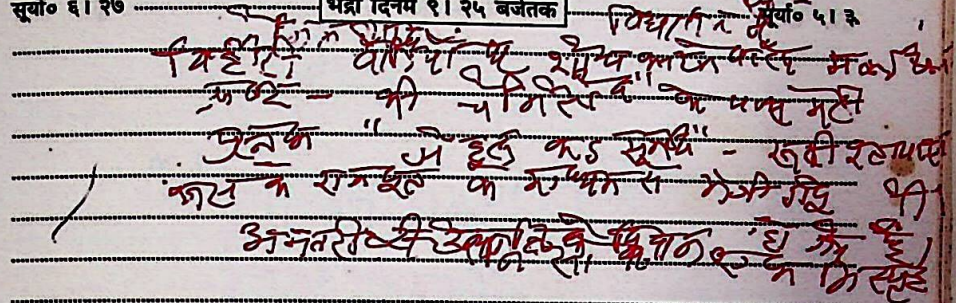

niyatasya tu sannyāsaḥ karmaṇo nopapadyate mohāttasya parityāgastāmasaḥ parikīrtitaḥ
duḥkhamityeva yatkarma kāyakleśabhayāttyajet sa kṛtvā rājasaṁ tyāgaṁ naiva tyāgaphalaṁ labhet
kāryamityeva yatkarma niyataṁ kriyate'rjuna saṅgaṁ tyaktvā phalaṁ caiva sa tyāgaḥ sāttviko mataḥ
(Ch. 18/7—9)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ज्ञानं कर्म च कर्ता च त्रिधैव गुणभेदतः । प्रोच्यते गुणसङ्ख्याने यथावच्छृणु तान्यपि । १९ ।
सर्वभूतेषु येनैकं भावमव्ययमीक्षते । अविभक्तं विभक्तेषु तज्ज्ञानं विद्धि सात्त्विकम् । २० ।
पृथक्त्वेन तु यज्ज्ञानं नानाभावान्पृथग्विधान् । वेत्ति सर्वेषु भूतेषु तज्ज्ञानं विद्धि राजसम् । २१ ।

सूर्यो० ६ । ३१ ····· भद्रा दिनमें २ । ७ बजेतक, वैनायकी श्रीगणेशचतुर्थीव्रत ····· सूर्यो० ५ । ३

गुरु पर- अरुण के अरूप- श्री रामाश्रयदास
के पैर- अरुणी के परमहंस सिंह- राम के अनुज
लक्ष्मण पदम के अंक परिच्छेद में ०।१२ वर्षी पद्मकोशी
वर्णन- हंस कैलाश सिंह जोधपुर हाल जयपुरी ।
" जिस प्रतिलाल जी अधिकारी ।
श्री देवरहा बाबा के शब्दों में लिखा कि वे
एक बड़ा बोलते सीधा सीधा लेकर जैसे तथा
आराधना किये मिथी- शेष बोलो तिरकुरकादि ।

jñānaṁ karma ca kartā ca tridhaiva guṇabhedataḥ procyate guṇasaṅkhyāne yathāvacchṛṇu tānyapi
sarvabhūteṣu yenaikaṁ bhāvamavyayamīkṣate avibhaktaṁ vibhakteṣu tajjñānaṁ viddhi sāttvikam
pṛthaktvena tu yajjñānaṁ nānābhāvānpṛthagvidhān vetti sarveṣu bhūteṣu tajjñānaṁ viddhi rājasam
(Ch. 18/19—21)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विविक्तसेवी लघ्वाशी यतवाक्कायमानसः । ध्यानयोगपरो नित्यं वैराग्यं समुपाश्रितः । ५२ ।
अहङ्कारं बलं दर्पं कामं क्रोधं परिग्रहम् । विमुच्य निर्ममः शान्तो ब्रह्मभूयाय कल्पते । ५३ ।
ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न काङ्क्षति । समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम् । ५४ ।

सूर्यो० ६ । ३९ ——— सूर्यो० ५ । ६

पौष कृष्ण ३, रविवार, 18 DEC.

सूर्यो० ६ । ४० सूर्यो० ५ । ६

भद्रा दिनमें ११ । ३९ बजेसे रात्रिमें १२ । २७ बजेतक

viviktasevī laghvāśī yatavākkāyamānasaḥ dhyānayogaparo nityaṁ vairāgyaṁ samupāśritaḥ
ahaṅkāraṁ balaṁ darpaṁ kāmaṁ krodhaṁ parigraham vimucya nirmamaḥ śānto brahmabhūyāya kalpate
brahmabhūtaḥ prasannātmā na śocati na kāṅkṣati samaḥ sarveṣu bhūteṣu madbhaktiṁ labhate parām
(Ch. 18/52—54)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इति ते ज्ञानमाख्यातं गुह्याद्गुह्यतरं मया । विमृश्यैतदशेषेण यथेच्छसि तथा कुरु । ६३ ।
सर्वगुह्यतमं भूयः शृणु मे परमं वचः । इष्टोऽसि मे दृढमिति ततो वक्ष्यामि ते हितम् । ६४ ।

सूर्यो० ६ । ४२ ——— भद्रा प्रातः ६ । ४१ बजेसे रात्रिमें ७ । ४२ बजेतक ——— सूर्यो० ५ । ८

शुक्रवार २२ दिसम्बर २००५,

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

iti te jñānamākhyātaṁ guhyādguhyataraṁ mayā vimṛśyaitadaśeṣeṇa yathecchasi tathā kuru
sarvaguhyatamaṁ bhūyaḥ śṛṇu me paramaṁ vacaḥ iṣṭo'si me dṛḍhamiti tato vakṣyāmi te hitam
(Ch. 18/63-64)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आरती

जय भगवद्गीते, जय भगवद्गीते।
हरि-हिय-कमल-विहारिणि सुन्दर सुपुनीते॥ जय०
कर्म-सुमर्म-प्रकाशिनि कामासक्तिहरा।
तत्त्वज्ञान-विकाशिनि विद्या ब्रह्म परा॥ जय०
निश्चल-भक्ति-विधायिनि निर्मल मलहारी।
शरण-रहस्य-प्रदायिनि सब विधि सुखकारी॥ जय०
राग-द्वेष-विदारिणि कारिणि मोद सदा।
भव-भय-हारिणि तारिणि परमानन्दप्रदा॥ जय०
आसुर-भाव-विनाशिनि नाशिनि तम-रजनी।
दैवी सद्गुणदायिनि हरि-रसिका सजनी॥ जय०
समता, त्याग सिखावनि, हरि-मुखकी बानी।
सकल शास्त्रकी स्वामिनि, श्रुतियोंकी रानी॥ जय०
दया-सुधा बरसावनि मातु! कृपा कीजै।
हरिपद-प्रेम दान कर अपनो कर लीजै॥ जय०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गीताप्रेससे प्रकाशित मासिक-पत्र

'कल्याण' (जनवरी सन् २००१ ई०)-का
विशेषाङ्क—**आरोग्य-अङ्क**
कोड नं० 1377 सजिल्द
मूल्य रु० ८० (बिना मासिक अङ्कके)

'कल्याण' (जनवरी सन् २००३ ई०)-का
विशेषाङ्क—**भगवत्प्रेम-अङ्क**
कोड नं० 1467 सजिल्द, मूल्य रु० १००
कोड नं० 1542 अजिल्द, मूल्य रु० ८०
(साथमें ११ मासिक अङ्क उपहारस्वरूप)

'कल्याण' (जनवरी सन् २००२ ई०)-का
विशेषाङ्क—**नीतिसार-अङ्क**
कोड नं० 1379 सजिल्द (मासिक अङ्कोंके साथ) १२०
कोड नं० 1472 सजिल्द (बिना मासिक अङ्कोंके) ८०

'कल्याण' (जनवरी सन् २००४ ई०)-का
विशेषाङ्क—**व्रतपर्वोत्सव-अङ्क**
वार्षिक शुल्क रु० १३०, सजिल्द रु० १५०

Subscribe our English Monthly—'KALYANA KALPATARU'
'Śrī Garga Saṁhitā' (Oct. 2004) ANNUAL SUBSCRIPTION Rs. 80

२००४ के कुछ महत्त्वपूर्ण नवीन प्रकाशन

कोड	पुस्तक-नाम	मूल्य
	विशिष्ट संस्करण	
1535	श्रीमद्भागवत-महापुराण-सटीक	३००
1536	दो खण्डोंमें सेट	
1490	श्रीमद्भागवत-सुधासागर	१८०
1468	सं० शिवपुराण	१४०
1544	श्रीरामचरितमानस-मूल, गुटका (अच्छी क्वालिटीके पतले पेपरपर)	३०
	ओड़िआ	
1463	श्रीरामचरितमानस-ग्रन्थाकार (सटीक)	१३०
1473	साधन-सुधा-सिन्धु	९०
	तेलुगु	
1419	श्रीरामचरितमानस केवल भाषा	७०
1477	वाल्मीकीय रामायण सुन्दरकाण्ड (सटीक)	५५

'कल्याण' [वर्ष-७९, सन् २००५ ई०]-का विशेषाङ्क—'देवीपुराण-शक्तिपीठाङ्क' [महाभागवत]

देवीपुराण-शक्तिपीठाङ्क [महाभागवत] की महत्ताको देखकर इसे 'कल्याण' वर्ष ७९, जनवरी २००५ के विशेषाङ्कके रूपमें 'सानुवाद' प्रकाशित किया जा रहा है। महाभागवतके रूपमें प्रसिद्ध इस पुराणमें भगवतीका विस्तृत माहात्म्य, उनके गङ्गा, पार्वती, सावित्री, लक्ष्मी, सरस्वती आदिके रूपमें प्रादुर्भावकी कथाएँ, सती-जन्म-विवाह, दक्षयज्ञ, सतीका आत्मदाह, सतीके अङ्गोंसे ५१ शक्तिपीठोंका उद्भव, पार्वती-जन्म, तपस्या, शिव-पार्वती-विवाह, देवी-गीता, लिङ्गमाहात्म्य, पूजन, उपासना आदिका सुन्दर निरूपण है।

वार्षिक शुल्क रु० १३०, सजिल्द रु० १५०
पञ्चवर्षीय शुल्क रु० ६५०, सजिल्द रु० ७५०

स्वयं ग्राहक बनें—
दूसरोंको ग्राहक बनावें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्मरण-पत्र

K. D. Sharma
Sodhaji More (सोदाजी मोड़)
गया
जिला - बोकारो स्टील सिटी
06542 - 285523

देवेन्द्र तिवारी
ग्राम - बरवाँ
पत्रालय - मेहनाजपुर
जनपद - आजमगढ़
गोभियों का पता -
Devendra Tiwari
8/C Govt colony
P.O - J.E. Gomia
Dist - Bokaro
Jharkhand
वाराणसी से गोमिया - 5.40 सुबह
10.20 सुबह
6.30 शाम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्मरण-पत्र

धौलपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS MoE Grant-2

स्मरण-पत्र

श्री ० ०००००००० DE 2587726/9415065149

श्री अविनाश कुमार ... 9415680744

वल्लभ राम वर्मा वार्ड नं. 17 नेतरा
वार्ड 64/A 7 उर्मिला राम

श्री चन्द्रभूषण राम ... 9935339566

श्री शान्ति राम लड्डूजी पटीदार होटल के सामने

X X X

श्री निरंजन तिवारी

वरण, गोरखपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS MoE Grant-2

स्मरण-पत्र

सविधान के परमहंस-आश्रम
स्वामी राजेश्वराश्रम
परमहंस
श्री दयादत्त पाण्डेय
संस्कृत-अध्यापक
पीताम्बरपीठ,

दूरभाष के द्वारा
श्री रामनरेश वर्मा,
समन्वयक राज
राम बदन आरक्षी अधिकारी
इण्टिया पीठ,
के कार्यालय में
पास.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection